VOL- X | ISSUE- X | OCTOBER | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

भारतीय संस्कृति का बदलता स्वरूप

डॉ राजेश त्रिपाठी
योग विभाग, गोविन्द गुरू जनजाति
विश्वविद्यालय बांसवाडा

सार :

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन संस्कृति थी जिसमें वर्णाश्रम व्यवस्था यज्ञदान, शिखा रखना इत्यादि कर्म थे। लेकिन पाश्चात्य संस्कृति के कारण आज का युवा शराब नशा अश्लीलता इत्यादि में फँस कर रह गया है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है। संस्कृति शब्द तथा संस्कार शब्द दोनों ही ''कृ'' धातु से उत्पन्न हुए है। किसी भी देश की संस्कृति की अभिव्यक्ति उसके आचार विचार, रीति–नीति, वेशभूषा द्वारा होती है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में १६ संस्कारों द्वारा जीवन को सुसंस्कृत बनाया गया है साथ ही वर्णाश्रम व्यवस्था के द्वारा लोगो को दैनिक कार्यो की जानकारी भी थी। इन विशिष्ट गुणों के कारण भारतीय संस्कृति अन्य सभी से संस्कृतियों से श्रेष्ठतम है। इन सभी विशेशताओं के कारण देशवासियों को चरित्र शिक्षा लेने के लिए कहा गया है।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्व स्व चरित्रं शिक्षेरन पृथिव्यामं सर्वमानवं।।
(मनु. २/२०)

आज भारत पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति से प्रभावित होता जा रहा है । वर्तमान पीढी अपनी गौरवमयी संस्कृति रूपी विरासत (उत्तराधिकार) से वंचित होती जा रही है। वह धर्म कर्म एवं संस्कारो से विमुख होकर सुख – शांति चाहती है। परिणाम शास्त्रो क अनुसार इस रूप में परिलक्षित हो रहा है।

यत्र त्वेतकुल ध्वंसा जायन्ते वर्णदूषका।
राष्ट्रिकैः सह तद राष्ट्र क्षिप्रमेव विनश्यति।।

अर्थात् धर्म एवं संस्कार से विहिन प्रजा स्वतः अपने साथ देश और समाज का विनाश कर देती है।

आचार विचार भारतीय हिन्दु संस्कृति के प्रमुख पोषक तत्व है। आचार को प्रथम धर्म माना गया है आचार प्रथमो धर्मः। आचार पथ का दृढतापूर्वक पालन कर मनुष्य देवकोटि में परिगणित होने लगता है इस आचार पथ से कभी विचलित न हो इसके लिए उसे सावधान करते हुए कहा गया आचारहीन च पुनन्ति वेदाः।

प्राचीनकाल से ही ब्रह्ममुहूर्त मे जागने, योग–ध्यान, प्राणायाम करने का शास्त्रों में वर्णित है। प्रातःकाल में वातावरण शान्त एवं स्फूर्तिदायक होता है। हमारे पूर्वज सभी ब्रह्ममुहूर्त में उठकर ध्यान, प्राणायाम योग कर स्वस्थ एवं दीघार्य जीवन जीते थे, परन्तु वर्तमान पीढ़ी पाश्चात्य की अंधी दौड के कारण इन सभी स्वास्थप्रद आदतों को छोडती जा रही है इसी के परिणामस्वरूप छोटी सी उम्र में हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, केंसर, माईग्रेन जैसी भयंकर बीमारियों से ग्रसित होते जा रहे है। आचार्य चक्रदत्त ने लिखा है –

कुचैलिनं दन्त मलोपधारिणं,
बलशिनं निष्ठुर भाषिणं च।
सूर्योदयं चास्तमिते श्यानं,
विमुञ्चति श्रीयीदि चक्रपाणि।।

अर्थात् मलिन वस्त्र पहनने वाले, दातुन न करने वाले बहुभोजी, कठोर बोलने वाले, सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सोने वाले को भले ही वे

श्रीपति नारायण क्यों न हो, लक्ष्मी (सुख, शोभा, मुख की कान्ति) त्याग देती है।

प्रात:काल में करदर्शन एवं भू–वंदन का अपना महत्व है, करदर्शन क्रिया में हम हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी, मध्य में सरस्वती, मूल में ब्रह्माजी के दर्शन करते है। वेदों व उपनिषदों में करदर्शन पर काफी जोर दिया गया है। भू–वंदन लौकिक माता का वंदन है जिसके आशीर्वाद से जीवन सफलीभूत होता है। धरा मात्र रूपा है मानव इस पर अपना पाँव रखे बिना किसी भी कार्य को नही कर सकता अत: भूमि से क्षमा याचना करनी चाहिए।

पाश्चात्य से प्रभावित वर्तमान पीढ़ी इन बातों को मात्र बकवास मानती है। जो नौ मास उदर में रखने वाली माता को भी उक्त अवधि का किराया कुक्षिका का किराये देने की बात कर दे तो वह भू–वदन, कर दर्शन को दकियानूसी कहे तो आश्चर्य किस बात का ?

प्रात:काल उठकर माता–पिता गुरूजनों से आशीर्वाद लिया जाता था लेकिन आज की पीढी झुकना अपना अपमान मानती है। आज पूरे विश्व में वृद्वों के साथ मारपीट की घटनाएं घटित हो रही है और वृद्वजनों को वद्वाश्रम में रहने पर मजबूर होना पड रहा है। संयुक्त परिवार जो हमारे समाज की धुरी था वह एकल परिवार में बदल गया। जिसके कारण तलाक, मारपीट, अवैध संबंध आदि अनेक दुर्घटनाएं घटित हो रही है और माननीय मूल्यों का निरन्तर पतन देखने को मिल रहा है। प्राचीनकाल काल में धोती–कुर्ता, पायजामा, आदि धारण किया जाता था, सिर पर पगडी व साफा पहना जाता था। हर कार्य के पीछे कोई ने कोई वैज्ञानिक रहस्य छिपा था। देव दर्शन हेतु नंगे पाव जाने के पीछे यह रहस्य छुपा था कि पैरों में एक्युप्रेशर के पॉइन्ट दब जाने से हमारा स्वास्थ्य उत्तम बना रहता था।

परन्तु पाश्चात्य में डूबी यह आधुनिक पीढ़ी फटे वस्त्रो को पहनना अपनी शान समझती है। भजन कीर्तन देव दर्शन को दकियानुसी मानती है। प्राचीनकालीन भारत में शिखा रखना तथा यज्ञोपवित रखना आवश्यक था। यज्ञोपवित को क्षत्रिय और वैश्य वर्ग तिलांजलि दे चुका तथा क्षत्रिय ब्राह्मण वर्ग भी केवल औपचारिकतावश रख रहा है। साथ ही भोजन एकान्त में बैठकर किया जाता है। साथ ही आज का युग भोजन खडे होकर जूते पहनकर करता है बिना हाथ पैर धोये किया जाता है। इसी प्रकार बनाने वालों को शुद्धता पर भी ध्यान नही दिया जाता है जिस कारण कई प्रकार के मानसिक विकास उत्पन्न हो रहे है।

आज पूरे विश्व में संस्कारो की कमी के कारण हत्या, बलात्कार, आत्महत्या, सामूहिक बलात्कार जैसी घटनाएं कुत्सित मानसिकता की परिणिति है। आज विवाह जैसे पवित्र बन्धन को हेयदृष्टि से देखा जाने लगा है। आधुनिकता की चकाचौंध के कारण लिव इन रिलेशनशीप का प्रचलन बढ रहा है। आधुनिकता के कारण मन अशान्त व व्याकुल रहता है तथा नकारात्मक विचारों का घेराव बना रहता है। आज का युवक शराब, नशा, मांसाहार करता है तथा इन सभी से अपने आप को उच्च स्तर का दिखाने का प्रयास करता है। बच्चों को मातृभाषा सीखाने की बजाज अंग्रेजी माध्यम में पढाया जाता है।

इस आधुनिक शिक्षा प्रणाली के कारण हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति विलुप्त सी होती जा रही है। आज का युवा शराब व नशे के अन्दर चूर होकर क्लब, रेस्तरा में अर्द्धनग्न होकर नृत्य कर रहा है। जगह–जगह हुक्काबार खोल दिये गये है आलिंगन, चुम्बन, कामुक हाव–भाव प्रदर्शन पाश्चात्य प्रभाव से प्रभावित होकर नाचना सामान्य बात हो गयी है।

भारतीय जनमानस पर प्रभावी होती पाश्चात्य संस्कृति को परिलक्षित कर समाष्टि रूप में यहीं कहना पडता है कि विदेशी भाव के कारण अपनी संस्कृति के प्रति जो उपेक्षा का भाव आ गया है उसे दूर हटाकर ऋषियों की दिव्य दृष्टि से अनुप्राणित अपने आदर्श जीवन दर्शन को भली–भांति जीवन में उतारकर हमें कल्याण मार्ग का पथिक बनने की और उन्मुख होना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

१. कल्याण, गीता प्रेस गोरखपुर (उ.प्र.)
२. वैदिक धर्म, जनवरी १९३८, सरस्वती सुषमा भाग ३–४ वर्ष ७ बनारस।
३. दिव्य ज्योति आचार्य केशव शर्मा भारती विहार मशोवरा शिमला १७१००७
४. वेद सविता स्वामी विद्यानंद विदेह वेद संस्थान सी २२, राजोरी गार्डन, नई दिल्ली, ११००२७